रिकार्ड–नैनहीन को राह.....ओमशांति प्रातःक्लास 6.1.1967
हे प्रभु, ईश्वर, परमात्मा कहने और पिता अक्षर कहने में कितना फर्क है।हे ईश्वर ,हे प्रभु कहने से कितना रिगार्ड रहता है।और फिर इनको पिता भी कहते है तो पिता अक्षर बहुत साधारण है।पितायें तो ढेर के ढेर हैं।प्रार्थना में भी कहते हैं हे प्रभु, हे ईश्वर।बाबा कही नहीं सकते।है तो परमपिता ना ;परंतु पिता अक्षर जैसे दब जाता है।परमात्मा अक्षर उंचा हो जाता है।बुलाते भी हैं हे प्रभु नैनहीन को राह बताओ।भले यह गीत तो नाटक आदि वालों ने ही बनाया है।मानते तो हैं ना।आत्मायें कहती हैं बाबा हमको मुक्ति जीवनमुक्ति की राह बताओ।प्रभु अक्षर कितना बड़ा है।पिता अक्षर है हल्का।यहां तुम जानते हो बाप आकर पढ़ाते हैं।लौकिक रीति तो पितायें बहुत हैं।बुलाते भी हैं तुम मात–पिता.....कितना साधारण अक्षर है।ईश्वर वा प्रभु कहने से समझते हैं कि वो तो क्या नहीं कर सकते।अभी तुम बच्चे जानते हो बाप आया हुआ है।बाप रास्ता बहुत सहज बताते हैं।बाप कहते हैं मेरे बच्चे तुम रावण की मत पर काम चिक्षा पर चढ़ भस्मीभूत हो गये हो।अभी मैं तुमको पावन बनाकर घर ले जाने आया हूँ।बाप को बुलाते भी इसलिए हैं कि आकर पतित से पावन बनाओ।बाप कहते हैं मैं आया हूँ तुम्हारी सेवा में।तुम बच्चे भी भारत की आलौकिक सेवा में हो।जो सर्विस तुम्हारे सिवाय और कोई कर नहीं सकते हैं।श्रीमत पर पवित्र बन और भारत को बनाते हो।बापू गांधी भी यह अक्षर रखते थे कि रामराज्य हो।अब कोई मनुष्य तो रामराज्य बना नहीं सकते।भारत की सेवा कर ना सके।नहीं तो प्रभु को पतित–पावन कह क्यों बुलाते?अब तुम बच्चों को भारत के लिए कितना लव है।सच्ची सेवा तो तुम करते हो।खास भारत की आम सारी दुनियां की।तुम जानते हो भारत को फिर से रामराज्य बनाते हो।जो बापूजी चाहते थे।यह फिर है बेहद का बापू।यह बेहद की सेवा करते हैं।इन्होंने भल राज्य लिया ;परंतु रामराज्य तो नहीं कर सके ना।फिर भी वो ही राक्षसी राज्य है।यह तुम बच्चे ही जानते हो।तुम्हारे में भी नम्बरवार यह नशा रहता है कि हम रामराज्य बनावेंगे।तुम गवर्मेंट के सर्वेंट हो।इस गवर्मेंट को बदलाकर दैवी गवर्मेंट बनाते हैं।इस समय है आसुरी भ्रष्टाचारी गवर्मेंट।तुमको भारत के लिए कितना फखुर है।जानते हो सतयुग में यह पावन भूमि थी।अभी तो पतित है।तुम जानते हो अभी हम बाप द्वारा फिर से पावन भूमि वा सुखधाम बना रहे हैं।सो भी गुप्त।श्रीमत भी गुप्त मिलती है।भारत गवर्मेंट के लिए ही तुम कर रहे हो ना।श्रीमत पर तुम भारत की उंच ते उंच सेवा अपने तन, मन, धन से कर रहे हो।कांग्रेसी लोग कितने जेल आदि में गये।तुमको तो जेल आदि में जाने की दरकार नहीं है।तुम्हारी तो है रुहानी बात।तुम्हारी लड़ाई भी है 5विकारों रूपी रावण से।जिस रावण का सारी पृथ्वी पर राज्य है।तुम्हारी यह सेना है।लंका भी एक छोटा वेट है।यह भी बेहद का वेट है।तुम बेहद के बाप की श्रीमत पर सबको रावण की जेल से छुड़ाती हो।यह जो भक्तिमार्ग के गुरू लोग हैं उनकी जंजीरों से भी छुड़ाते हो।यह भी कितना सामना करते हैं।कहते हैं यह ब्रह्माकुमारियां तो और ही विनाश के लिए आई हैं।यह तो तुम जानते हो इस पतित दुनियां का विनाश होना ही है।तुम शिवशक्तियां हो ना।शिवशक्ति यह (गोप) भी हैं।तुम गुप्त रीति भारत की सेवा कर रहे हो।आगे चल सबको पता पड़ेगा।तुम्हारी है श्रीमत पर रुहानी सेवा।उन कांगेसियों जिन्होंने मदद की है उन्हों को कितनी मदद मिलती है।कोई प्रेजीडेंट ,प्राइममिनिस्टर ,एम.पी.आदि2 बनते रहते हैं।तुम तो हो गुप्त।गवर्मेंट जानती ही नहीं कि यह ब्रह्माकुमारियां तो भारत की तन,मन,धन से श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ सच्च खंड बनाती हैं।भारत सच्च खंड था।अब है झूठ खंड।सच्च तो एक ही बाप है।कहा भी जाता है गॉड इज़ ट्रुथ।तुमको सत्य नर से नारायण बनाने की शिक्षा दे रहे हैं।बाप कहते हैं कल्प पहले भी तुमको नर से नारायण बनाया था।रामायण में तो क्या2 कथायें लिख दी हैं।कहते हैं राम ने बंदर सेना ली।अभी तुम पहले बंदर मिसल थे ना।एक सीता की तो बात नहीं हो सकती।शास्त्रों में कितनी (दंत) कथायें लिख दी हैं।बंदर बुद्धि तो हैं ना।(सूरत) मनुष्य

सीरत बंदर जैसी है।बाप बैठ समझाते हैं।वैसे हम रावण राज्य का विनाश कराय और रामराज्य स्थापन करते हैं।इसमें कोई तकलीफ की बात नहीं।वो तो कितना खर्चा करते हैं।समझते कुछ भी नहीं हैं।बड़े2 लोग सभी जाते हैं।फारेनर्स को भी दिखाते हैं।समझते कुछ नहीं।अभी बाप बैठ समझाते हैं।तो तुम बच्चों को दिल में उमंग हो कि हम भारत के सच्चे रुहानी सरवेंट हैं।बाकी सारी दुनियां रावण की मत पर है।तुम हो राम की श्रीमत पर।राम कहो ,शिव कहो।नाम बहुत रख दिये हैं।कितनी (दंत) कथायें हैं शास्त्रों में और उन शास्त्रों को कितना मान देते हैं।परिक्रमा दिलाते हैं।चित्रों की भी परिक्रमा दिलाते हैं।बड़ी2 यह रस्म–रिवाज़ चलता आया है।यह है सब भक्तिमार्ग।यहां तुम कितनी शांति में बैठे हो।जानते हो हम भारत के मोस्ट वैल्युएबुल सर्वेंट हैं।हम गवर्मेंट को चैलेंज करते हैं श्रीमत पर।कहते भी हैं हे पतित–पावन आकर पावन बनाओ।साधु–सन्यासी आदि तो कर ना सके।वो तो पावन दुनियां वैकुंठ को जानते ही नहीं हैं।उनका धर्म ही अलग है।तुम जानते हो सतयुग में हमको कितना सुख मिलता है।कारून का खजाना मिलता है।वहां एवरेज आयु भी कितनी बड़ी होती है।वो है योगी,यहां हैं सब भोगी।वो पावन ,यह पतित।कितना रात–दिन का फर्क है।कृष्ण को भी योगी कहते हैं।महात्मा भी कहते हैं ;परंतु वो ही सच्चा महात्मा है।इनकी तो महिमा गाई जाती है सर्वगुण सम्पन्न 16कला सम्पूर्ण निर्विकारी .....इन कलियुगी महात्माओं की थोड़े ही यह महिमा करेंगे।इनकी तो महिमा हो ना सके।उनकी तो आत्मा और शरीर दोनों पवित्र है।यह तो गृहस्थियों पास व्यभिचार से जन्म ले फिर सन्यासी बनते हैं।यह बातें अभी तुमको बाप समझाते हैं।गवर्मेंट तो है इररिलिजियस ,अनराइटियस।सतयुग में कैसे थे।रिलीजस राइटियस थे।100परसेंट सालवेंट थे।एवर हैप्पी में रहते थे।रात–दिन का फर्क है।यह एक्युरेट तुम ही जानते हो।मनुष्य थोड़े ही समझते हैं भगवान ने हमको बंदर सम्प्रदाय का टाइटिल दिया है।रावण ने बिल्कुल ही बंदर बुद्धि बना दिया है ;परंतु अपने को कोई भी बंदर समझते थोड़े ही हैं।कितने भ्रष्टाचारी हैं।हम भ्रष्टाचारी हैं यह कोई समझते नहीं हैं।कितनी करप्शन है।कैसे2 किसका होता है।भारत ही हेवन था।यह किसी को पता थोड़े ही पड़ता है।भारत हेल कैसे बना।ल.ना. की पूजा करते हैं।मंदिर बनाते हैं।समझते कुछ भी नहीं हैं।बाबा समझाते रहते हैं अच्छी2 पोजीशन वाले जो हैं (विरला) को भी समझा सकते हो।इन्होंने यह पद कैसे पाया,क्या किया जो इनके मंदिर बनाते हो?बिगर आक्युपेशन जानने और पूजा करने यह तो पत्थर पूजा अथवा गुड्डिडयों की पूजा हो गई।और धर्म वाले तो जानते हैं क्राइस्ट फलानी (सम्वत) पर आया।इन प्रसेपटर्स को गुरू कहते हैं ;परंतु वास्तव में गुरू है नहीं।सतगुरू तो एक ही है।बाकी सब नाम मात्र गुरू हैं।वे सब हैं भक्तिमार्ग के।सतयुग–त्रेता में गुरू होता नहीं।गुरू चाहिये सद्गति के लिए।तो तुम बच्चों को कितना रुहानी गुप्त (पुरुषार्थ) होना चाहिए।रुह को खुशी होनी चाहिए।आधा कल्प देह अभिमानी बने हैं।अब बाप कहते हैं अशरीरी बनो।अपने को आत्मा समझो।हमारी आत्मा बाबा से सुन रही है।और सतसंगों में कब ऐसा नहीं समझावेंगे।यह रुहानी बाप रुह को बैठ समझाते हैं।रुह ही सब कुछ सुनती है।आत्मा कहती है मैं प्राइममिनिस्टर हूँ।फलानी हूँ।आत्मा ने इस शरीर द्वारा कहा कि मैं प्राइममिनिस्टर बनी हूँ।अभी तुम कहते हो हम आत्मा पुरुषार्थ कर स्वर्ग का देवी देवता बन रहे हैं।मैं आत्मा इस शरीर द्वारा फलाना बना हूँ।अहम् आत्मा मम यह शरीर है।देही अभिमानी बनने में ही बड़ी मेहनत है।घड़ी2 अपने को आत्मा समझ बाप को याद करते रहो तो विकर्म विनाश हो जावे।तुम मोस्ट ओबिडियेंट सर्वेंट हो।कितना बड़ा कर्तव्य करते हो गुप्त रीति से।गुप्त नशा रहना चाहिए ना।हम गवर्मेंट के रुहानी सर्वेंट हैं।भारत को स्वर्ग बनाते हैं।बापूजी भी चाहते थे नई दुनियां में नया भारत हो।नई देहली हो।अभी नई दुनियां तो है नहीं।यह पुरानी देहली कब्रिस्तान बननी है।अभी इसको परिस्तान थोड़े ही कहेंगे।नई दुनियां में परिस्तान नई देहली बना रहे हैं।यह बड़ी समझ की बाते हैं।यह बातें भूलनी नहीं चाहिए।भारत को फिर से सुखधाम बनाना कितना

उंच कार्य है।इन कांग्रेसियों ने क्या किया?और ही दुःखधाम बना दिया।ड्रामा प्लान अनुसार सृष्टि पुरानी होनी ही है।दुःखधाम है ना।दुःखहर्ता–सुखकर्ता एक बाप को ही कहा जाता है।तुम जानते हो बाप हर 5000वर्ष बाद आकर दुःखी भारत को सुखी बनाते हैं।सुख भी देते हैं।शांति भी देते हैं।मनुष्य कहते भी हैं मन की शांति कैसे मिले?अभी शांति तो शांतिधाम, स्वीटहोम में ही होती है।इनको कहा जाता है शांतिधाम।जहां आवाज़ की नाम नहीं है।सूर्य–चांद आदि भी नहीं होते।अभी तुम बच्चों को यह सारा ज्ञान है।बाप ही आकर ओबिडियेंट सर्वेंट बनते हैं।अब गांधी के हाथ में गीता थी और कहते थे पतित–पावन सीता राम.....बाप को बिल्कुल जानते ही नहीं हैं।उनको भी कहते थे महात्मा।अब महान आत्मा तो सिवाय सतयुग के कहीं हो नहीं सकती है।वहां आत्मायें प्योरिटी थीं।तो पीस, प्रासपर्टी भी थी।अभी प्योरिटी नहीं तो कुछ भी नहीं है।प्योरिटी का ही मान है।देवतायें प्योर हैं तब तो उनके आगे माथा टेकते हैं।प्योर को पावन, इम्प्योर को पतित कहा जाता है।तो वो था हद का बापूजी।यह है सारे विश्व का बेहद का बापूजी।ऐसे तो मेयर को भी कहेंगे सिटी फादर।यह सब गपोड़े को राज्य है।वहां थोड़े ही ऐसी बातें होंगी।वहां तो कायदेसिर राज्य चलता है।बुलाते भी हैं हे पतित–पावन आओ।फिर बाप कहते हैं पवित्र बनो तो कहते हैं कैसे होगा।फिर बच्चे कैसे पैदा होंगे।सृष्टि कैसे वृद्धि को पावेगी।उनको यह पता नहीं कि ल.ना. सम्पूर्ण निर्विकारी थे।तुम बच्चों को कितना अपोजिशन सहन करना पड़ता है।ड्रामा में जो कल्प पहले हुआ है वो रिपीट होता है।ऐसे नहीं कि ड्रामा पर खड़े हो जाना है।ड्रामा में होगा तो मिलेगा।स्कूल में ऐसे बैठे रहने से कोई पास होवेंगे क्या?हर एक चीज़ लिए मनुष्य का पुरुषार्थ चलता है।पुरुषार्थ बिगर पानी भी ना मिल सके।सेकेंड बाय सेकेंड जो होता है,जो पुरुषार्थ चलता है वो प्रारब्ध के लिए।यह बेहद का पुरुषार्थ करना है बेहद के सुख लिये।अभी है भक्तिमार्ग की रात।ब्रह्मा की रात सो ही ब्राह्मणों की रात।फिर ब्राह्मणों का (दिन)।शास्त्रों में भी है समझते कुछ भी नहीं हैं।यह बाबा खुद भी बैठकर रामायण गीता भागवत आदि सुनाते थे।पण्डित बन बैठे थे।अभी समझते हैं वो तो भक्तिमार्ग है।अभी भक्तिमार्ग का आधा कल्प पूरा होता है।फिर ज्ञान मार्ग का दिन शुरू होता है।ज्ञान अलग चीज़ है।बाप कहते हैं तुम काम चिक्षा पर बैठकर सभी काले बन गये हो।कृष्ण को भी श्यामसुंदर कहते हैं ना।विष्णु को भी,राम भी, कहीं श्याम, कहीं सुंदर बना देते हैं।अच्छा, कृष्ण को तक्षक सर्प ने डसा।राम को किसने डसा?शिवलिंग भी कोई सफेद ,कोई काला बनाते हैं।पुजारी लोग कितने अंधश्रद्धालू हैं।कितनी भूतपूजा है।यह शरीर 5तत्वों का बना हुआ है ना।शरीर की पूजा गोया 5तत्वों की पूजा हो गई।इसको कहा जाता है व्यभिचारी पूजा।भक्ति पहले अव्यभिचारी थी।एक शिव की ही होती है।अभी तो देखो क्या2 पूजा होती रहती है।बंदर की भी पूजा करते रहते हैं।बाप वंडर भी दिखाते हैं।नालेज भी समझा रहे हैं।कांटों से फूल बना रहे हैं।इनको कहते ही हैं गार्डन आफ फ्लावर्स।कराची में एक पठान था।पहरे पर तो वो भी ध्यान में चला जाता था।कहते थे हम बहिश्त में गये।खुदा ने हमको फूल दिया।उनको बड़ा मजा आता था।वंडर है ना।वो तो 7वंडर्स कहते हैं।वास्तव में वंडर आफ दी वर्ल्ड तो स्वर्ग है।यह किसी को भी पता नहीं है।तुम बच्चों को कितना फर्स्ट क्लास ज्ञान मिला है।तुमको कितनी खुशी होनी चाहिए।कितना हाइएस्ट बापदादा है और कितना सिम्पल रहता है।बाप की ही महिमा गाई जाती है।वो निराकार ,निरहंकारी है।बाप को तो आकर सेवा करनी है ना।बाप हमेशा बच्चे की सेवा कर उनको धन–दौलत दे खुद वानप्रस्थ ले लेते हैं।बच्चों को माथे पर, कुल्हे पर चढ़ाते हैं।तुम बच्चे स्वीटहोम में जाकर फिर स्वीट बादशाही आकर करेंगे।बाप कहते हैं हम तो बादशाही नहीं लेंगे।सच्चा निष्काम सेवाधारी तो एक बाप ही है।तो बच्चों को कितनी खुशी रहनी चाहिए ;परंतु माया भुला देती है।इतने बड़े बापदादा को भूलना थोड़े ही है।डाडे की मिलकियत का कितना फखुर रहता है।तुमको तो शिवबाबा मिला है।उनकी मिल्कियत है।बाप कहते हैं मुझे याद करो और दैवी गुण धारण करो।ओम।